Ecc

Chapter 7

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

1	טֹוב	שֵׁם	מִשֶּׁמֶן	טֹוב	יֹום	הַמָּוֶת	מִיֹּום	הִוָּלְדֹו׃	
	भला	नाम	तेल-से	अच्छे	और-दिन	मृत्यु-का	दिन-से	उसके-जन्म-के	
		H8034	H8081		H3117	H4194	H3117	H3205	

सुयश, अच्छी सुगन्ध से उत्तम है। वह दिन जन्म के दिन से सदा उत्तम है जब व्यक्ति मरता है। उत्तम है वह दिन व्यक्ति जब मरता है।

2	טֹוב	לָלֶכֶת	אֶל־	בֵּית־	אֶבֶל	מִלֶּכֶת	אֶל־	בַּיִת	מִשְׁתֶּה	בַּאֲשֶׁר	הִוא	סֹוף
	भला	जाना	की-ओर-	घर-	शोक-के	जाने-से	की-ओर-	घर	दावत-के	क्योंकि	यही	अंत
		H3212	H0413		H0060	H3212	H0413		H4960		H1931	H5490

כָּל־	הָאָדָם	וְהַחַי	יִתֵּן	אֶל־	לִב�ֹּו׃
सब-	मनुष्य-का	और-जीवित	लगाएगा	की-ओर-	अपने-मन-में
H3605	H0120		H5414	H0413	

उत्सव में जाने से जाना गर्मी में, सदा उत्तम हुआ करता है। क्योंकि सभी लोगों की मृत्यु तो निश्चित है। हर जीवित व्यक्ति को सोचना चाहिये इसे।

3	טֹוב	כָּעַס	מִשְּׂחֹק	כִּי־	בְרַע	פָּנִים	יִיטַב	לֵב׃
	भला	खेद	हँसी-से	क्योंकि-	उदासी-से	चेहरे-की	अच्छा-होता-है	मन
			H7814		H7455	H6440	H3190	

हंसी के ठहाके से शोक उत्तम है। क्योंकि जब हमारे मुख पर उदासी का वास होता है, तो हमारे हृदय शुद्ध होते है।

4	לֵב	חֲכָמִים	בְּבֵית	אֵבֶל	וְלֵב	כְּסִילִים	בְּבֵית	שִׂמְחָה׃
	मन	बुद्धिमानों-का	घर-में	शोक-के	और-मन	मूर्खों-का	घर-में	आनन्द-के
		H2450		H0060		H3684		H8057

विवेकी मनुष्य तो सोचता है मृत्यु की किन्तु मूर्ख जन तो बस सोचते रहते हैं कि गुजरे समय अच्छा।

5	טֹוב	לִשְׁמֹעַ	נַעֲרַת	חָכָם	מֵאִישׁ	שֹׁמֵעַ	שִׁיר	כְּסִילִים׃
	भला	सुनना	डाँट	बुद्धिमान-की	मनुष्य-से	जो-सुनता-है	गीत	मूर्खों-का
		H8085	H1606	H2450	H0376	H8085		H3684

विवेकी से निन्दित होना उत्तम होता है, अपेक्षाकृत इसके कि मूर्ख से प्रशंसित हो।

6	כִּי	כְּקֹול	הַסִּירִים	תַּחַת	הַסִּיר	כֵּן	שְׂחֹק	הַכְּסִיל	וְגַם־	זֶה	הָבֶל׃
	क्योंकि	आवाज़-जैसी	काँटों-की	नीचे	कड़ाही	वैसे	हँसी	मूर्ख-की	और-यह-भी-	यह	व्यर्थता
				H8478			H7814	H3684	H1571	H2088	H1892

मूर्ख का ठहाका तो बेकार होता है। यह वैसे ही होता है जैसे कोई काँटों को नीचे जलाकर पात्र तपाये।

7	כִּי	הָעֹשֶׁק	יְהוֹלֵל	חָכָם	וְיאַבֵּד	אֶת־	לֵב	מַתָּנָה׃
	क्योंकि	अत्याचार	पागल-बनाता-है	बुद्धिमान-को	और-नष्ट-करता-है	—	मन-को	उपहार-का
		H6233		H2450	H0006	H0853		H4979

लोगों को सताकर लिया हुआ धन विवेकी को भी मूर्ख बना देता है, और घूस में मिला धन उसकी मति को हर लेता है।

8	טֹוב	אַחֲרִית	דָּבָר	מֵרֵאשִׁיתֹו	טֹוב	אֶרֶךְ־	רוּחַ	מִגְבַּהּ־	רוּחַ׃
	भला	अंत	बात-का	उसके-आरम्भ-से	भला	लम्बी-	आत्मा	घमंडी-	आत्मा-से
		H0319	H1697	H7225		H0750	H7307	H1362	H7307

बात को शुरू करने से अच्छा उसका अन्त करना है। उत्तम है नम्रता और धैर्य धीरज के खोने और अंहकार से।

9

אַל־	תְּבַהֵל	בְּרוּחֲךָ	לִכְעוֹס	כִּי	כַעַס	בְּחֵיק	כְּסִילִים	יָנוּחַ׃
मत-	जल्दी-कर	अपनी-आत्मा-में	क्रोधित-होने-को	क्योंकि	क्रोध	गोद-में	मूर्खों-के	ठहरता-है
H0408	H0926	H7307	H3707			H2436	H3684	H5117

क्रोध में जल्दी से मत आओ क्योंकि क्रोध में आना मूर्खता है।

10

אַל־	תֹּאמַר	מֶה	הָיָה	שֶׁהַיָּמִים	הָרִאשֹׁנִים	הָיוּ	טוֹבִים	מֵאֵלֶּה	כִּי	לֹא	מֵחָכְמָה
मत-	कह	क्यों	था	कि-दिन	पहले-के	थे	अच्छे	इनसे	क्योंकि	नहीं	बुद्धि-से
H0408	H0559	H4100	H1961	H3117	H7223	H1961		H0428		H3808	H2451

שָׁאַלְתָּ	עַל־	זֶה׃
तूने-पूछा	विषय-में-	इस
H7592		H2088

मत कहो, “बीते दिनों में जीवन अच्छा क्यों था?” विवेकी हमें यह प्रश्न पूछने को प्रेरित नहीं करता है। विवेकी हमें प्रेरित नहीं करता है पूछने यह प्रश्न।

11

טוֹבָה	חָכְמָה	עִם־	נַחֲלָה	וְיֹתֵר	לְרֹאֵי	הַשָּׁמֶשׁ׃
अच्छी	बुद्धि	साथ-	विरासत-के	और-लाभ	देखनेवालों-को	सूर्य-के
	H2451		H5159	H3148	H7200	H8121

जैसे उत्तराधिकारी में सम्पत्ति का प्राप्त करना अच्छा है वैसे ही बुद्धि को पाना भी उत्तम है। जीवन के लिये यह लाभदायक है।

12

כִּי	בְּצֵל	הַחָכְמָה	בְּצֵל	הַכָּסֶף	וְיִתְרוֹן	דַּעַת	הַחָכְמָה	תְּחַיֶּה	בְעָלֶיהָ׃
क्योंकि	छाया-में	बुद्धि-की	छाया-में	चाँदी-की	और-लाभ	ज्ञान-का	बुद्धि	जिलाती-है	अपने-मालिकों-को
	H6738	H2451	H6738	H3701	H3504	H1847	H2451	H2421	H1167

धन के समान बुद्धि भी रक्षा करती है। बुद्धि के ज्ञान का लाभ यह है कि यह विवेकी जन को जीवित रखता है।

13

רְאֵה	אֶת־	מַעֲשֵׂה	הָאֱלֹהִים	כִּי	מִי	יוּכַל	לְתַקֵּן	אֵת	אֲשֶׁר	עִוְּתוֹ׃
देख	—	कार्य-को	परमेश्वर-के	क्योंकि	कौन	सकता-है	सीधा-करना	—	जिसे	उसने-टेढ़ा-किया-है
H7200	H0853	H4639	H0430		H4310	H3201	H8626	H0853		H5791

परमेश्वर की रचना को देखो। देखो तुम एक बात भी बदल नहीं सकते। चाहे तुम यही क्यों न सोचो कि वह गलत है।

14

בְּיוֹם	טוֹבָה	הֱיֵה	בְטוֹב	וּבְיוֹם	רָעָה	רְאֵה	גַּם	אֶת־	זֶה	לְעֻמַּת־	זֶה
दिन-में	भलाई-के	हो	भलाई-में	और-दिन-में	बुराई-के	देख	भी	—	यह	साथ-	इसके
H3117		H1961		H3117		H7200	H1571	H0853	H2088	H5980	H2088

עָשָׂה	הָאֱלֹהִים	עַל־	דִּבְרַת	שֶׁלֹּא	יִמְצָא	הָאָדָם	אַחֲרָיו	מְאוּמָה׃
बनाया-है	परमेश्वर-ने	विषय-में-	मामले-के	ताकि-नहीं	पाए	मनुष्य	उसके-बाद	कुछ-भी
	H0430		H1700	H3808	H4672	H0120		H3972

जब जीवन उत्तम है तो उसका रस लो किन्तु जब जीवन कठिन है तो याद रखो कि परमेश्वर हमें कठिन समय देता है और अच्छा समय भी देता है और कल क्या होगा यह तो कोई भी नहीं जानता।

15

אֶת־	הַכֹּל	רָאִיתִי	בִּימֵי	הֶבְלִי	יֵשׁ	צַדִּיק	אֹבֵד	בְּצִדְקוֹ	וְיֵשׁ
—	सब-कुछ	मैंने-देखा	दिनों-में	मेरी-व्यर्थता-के	है	धर्मी	नाश-होता-है	अपनी-धार्मिकता-में	और-है
H0853	H3605	H7200	H3117	H1892	H3426	H6662	H0006	H6664	H3426

רָשָׁע	מַאֲרִיךְ	בְּרָעָתוֹ׃
दुष्ट	लम्बा-करता-है	अपनी-बुराई-में
H7563	H0748	

अपने छोटे से जीवन में मैंने सब कुछ देखा है। मैंने देखा है अच्छे लोग जवानी में ही मर जाते हैं। मैंने देखा है कि बुरे लोग लम्बी आयु तक जीते रहते हैं।

16

אַל־	תְּהִי	צַדִּיק	הַרְבֵּה	וְאַל־	תִּתְחַכַּם	יוֹתֵר	לָמָּה	תִּשּׁוֹמֵם׃
मत-	हो	धर्मी	बहुत	और-मत-	बुद्धिमान-बन	अत्यधिक	क्यों	तू-नाश-हो
H0408	H1961	H6662		H0408	H2449	H3148	H4100	H8074

सो अपने को हलकान क्यों करते हो? न तो बहुत अधिक धर्मी बनो और न ही बुद्धिमान अन्यथा तुम्हें एसी बातें देखने को मिलेगी जो तुम्हें आघात पहुँचाएगी न तो बहुत अधिक दुष्ट बनो और न ही मूर्ख अन्यथा समय से पहले ही तुम मर जाओगे।

17

עִתֶּךָ׃	בְּלֹא	תָמוּת	לָמָּה	סָכָל	תְּהִי	וְאַל־	הַרְבֵּה	תִּרְשַׁע	אַל־
अपने-समय-के	बिना-	तू-मरे	क्यों	मूर्ख	हो	और-मत-	बहुत	दुष्ट-हो	मत-
H6256	H3808	H4191	H4100	H5530	H1961	H0408		H7561	H0408

सो अपने को हलकान क्यों करते हो? न तो बहुत अधिक धर्मी बनो और न ही बुद्धिमान अन्यथा तुम्हें एसी बातें देखने को मिलेगी जो तुम्हें आघात पहुँचाएगी न तो बहुत अधिक दुष्ट बनो और न ही मूर्ख अन्यथा समय से पहले ही तुम मर जाओगे।

18

יְרֵא	כִּי־	יָדֶךָ	אֶת־	תַּנַּח	אַל־	מִזֶּה	וְגַם־	בָּזֶה	תֶּאֱחֹז	אֲשֶׁר	טוֹב
डरनेवाला	क्योंकि-	अपना-हाथ	—	छोड़	मत-	इससे	और-भी-	इसे	तू-पकड़े	कि	भला
H3373		H3027	H0853	H3240	H0408	H2088	H1571	H2088	H0270		

כֻּלָּם׃	אֶת־	יֵצֵא	אֱלֹהִים
सबसे	—	निकलेगा	परमेश्वर-से
H3605	H0853	H3318	H0430

थोड़ा यह बनों और थोड़ा वह। यहाँ तक कि परमेश्वर के अनुयायी भी कुछ अच्छा करेंगे तो बुरा भी।

19

בָּעִיר׃	הָיוּ	אֲשֶׁר	שַׁלִּיטִים	מֵעֲשָׂרָה	לֶחָכָם	תָּעֹז	הַחָכְמָה
नगर-में	थे	जो	शासकों	दस-से	बुद्धिमान-को	शक्तिशाली-बनाती-है	बुद्धि
	H1961		H7989	H6235	H2450	H5810	H2451

निश्चय ही इस धरती पर कोई ऐसा अच्छा व्यक्ति नहीं है जो सदा अच्छा ही अच्छा करता है और बुरा कभी नहीं करता। बुद्धि व्यक्ति को शक्ति देती है। किसी नगर के दस मूर्ख मुखियाओं से एक साधारण बुद्धिमान पुरुष अधिक शक्तिशाली होता है।

20

יֶחֱטָא׃	וְלֹא	טּוֹב	יַעֲשֶׂה־	אֲשֶׁר	בָּאָרֶץ	צַדִּיק	אֵין	אָדָם	כִּי
पाप-करे	और-नहीं	भलाई	करे-	जो	पृथ्वी-पर	धर्मी	नहीं-है	मनुष्य	क्योंकि
H2398	H3808				H0776	H6662	H0369	H0120	

निश्चय ही इस धरती पर कोई ऐसा अच्छा व्यक्ति नहीं है जो सदा अच्छा ही अच्छा करता है और बुरा कभी नहीं करता। बुद्धि व्यक्ति को शक्ति देती है। किसी नगर के दस मूर्ख मुखियाओं से एक साधारण बुद्धिमान पुरुष अधिक शक्तिशाली होता है।

21

אֶת־	תִשְׁמַע	לֹא־	אֲשֶׁר	לִבֶּךָ	תִּתֵּן	אַל־	יְדַבֵּרוּ	אֲשֶׁר	הַדְּבָרִים	לְכָל־	גַּם
—	तू-सुने	नहीं-	ताकि-	अपना-मन	दे	मत-	वे-बोलें	जो	बातों-पर	सब-	भी
H0853	H8085	H3808			H5414	H0408	H1696		H1697	H3605	H1571

מְקַלְלֶךָ׃	עַבְדְּךָ
तुझे-शाप-देते-हुए	अपने-दास-को
H7043	H5650

लोग जो बातें कहते हैं उन सब पर कान मत दो। हो सकता है तुम अपने सेवक को ही तुम्हारे विषय में बुरी बातें कहते सुनो।

22

קִלַּלְתָּ	)אַתָּה(	]את[	גַּם־	אֲשֶׁר	לִבֶּךָ	יָדַע	רַבּוֹת	פְּעָמִים	גַּם־	כִּי
शाप-दिया-है	तूने	—	भी-	कि	तेरा-मन	जानता-है	बहुत	बार	भी-	क्योंकि
H7043			H1571			H3045		H6471	H1571	

אֲחֵרִים׃
दूसरों-को
H0312

और तुम जानते हो कि तुमने भी अनेक अवसरों पर दूसरों के बारे में बुरी बातें कही हैं।

23

מִמֶּנִּי׃	רְחוֹקָה	וְהִיא	אֶחְכָּמָה	אָמַרְתִּי	בַחָכְמָה	נִסִּיתִי	זֹה	כָּל־
मुझसे	दूर	और-वह	मैं-बुद्धिमान-होऊँगा	मैंने-कहा	बुद्धि-से	मैंने-परखा	यह	सब-
	H7350	H1931	H2449	H0559	H2451	H5254	H2090	H3605

इन सब बातों के बारे में मैंने अपनी बुद्धि और विचारों का प्रयोग किया है। मैंने सच्चे अर्थ में बुद्धिमान बनना चाहा है। किन्तु यह तो असम्भव था।

24

יִמְצָאֶנּוּ׃	מִי	עָמֹק	וְעָמֹק	שֶׁהָיָה	מַה־	רָחוֹק
पाएगा-उसे	कौन	गहरा	और-गहरा	था	जो-	दूर
H4672	H4310	H6013	H6013	H1961	H4100	H7350

मैं समझ नहीं पाता कि बातें वैसी क्यों है जैसी वे हैं। किसी के लिये भी यह समझना बहुत मुश्किल है।

25

סַבּוֹתִי	אֲנִי	וְלִבִּי	לָדַעַת	וְלָתוּר	וּבַקֵּשׁ	חָכְמָה	וְחֶשְׁבּוֹן
मैं-मुड़ा	मैं	और-मेरा-मन	जानने-को	और-छानबीन-करने-को	और-खोजने-को	बुद्धि	और-गिनती
H5437	H0589		H3045	H8446	H1245	H2451	H2808

וְלָדַעַת	רֶשַׁע	כֶּסֶל	וְהַסִּכְלוּת	הוֹלֵלוֹת׃
और-जानने-को	दुष्टता	मूर्खता	और-मूर्खता	पागलपन
H3045	H7562	H3689		H1947

> मैंने अध्ययन किया और सच्ची बुद्धि को पाने के लिये बहुत कठिन प्रयत्न किया। मैंने हर वस्तु का कोई हेतु ढूँढने का प्रयास किया किन्तु मैंने जाना क्या? मैंने जाना कि बुरा होना बेवकूफी है और मूर्ख व्यक्ति का सा आचरण करना पागलपन है।

26

וּמוֹצֶא	אֲנִי	מַר	מִמָּוֶת	אֶת־	הָאִשָּׁה	אֲשֶׁר־	הִיא	מְצוֹדִים	וַחֲרָמִים	לִבָּהּ
और-मैं-पाता-हूँ	मैं	कड़वा	मृत्यु-से	—	स्त्री-को	जो-	वह	जाल	और-बंधन	उसका-मन
H4672	H0589	H4751	H4194	H0853	H0802		H1931			

אֲסוּרִים	יָדֶיהָ	טוֹב	לִפְנֵי	הָאֱלֹהִים	יִמָּלֵט	מִמֶּנָּה	וְחוֹטֵא	יִלָּכֶד	בָּהּ׃
बंधे-हुए	उसके-हाथ	भला	सामने	परमेश्वर-के	छूटेगा	उससे	और-पापी	पकड़ा-जाएगा	उसमें
H0612	H3027		H6440	H0430	H4422		H2398	H3920	

> मैंने यह भी पाया कि कुछ स्त्रियाँ एक फन्दे के समान खतरनाक होती हैं। उनके हृदय जाल के जैसे होते हैं और उनकी बाहें जंजीरों की तरह होती हैं। इन स्त्रियों की पकड़ में आना मौत की पकड़ में आने से भी बुरा है। वे लोग जो परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं, ऐसी स्त्रियों से बच निकलते हैं किन्तु वे लोग जो परमेश्वर को अप्रसन्न करते हैं उनके द्वारा फाँस लिये जाते हैं।

27

רְאֵה	זֶה	מָצָאתִי	אָמְרָה	קֹהֶלֶת	אַחַת	לְאַחַת	לִמְצֹא	חֶשְׁבּוֹן׃
देख	यह	मैंने-पाया	कहती-है	कोहेलेत	एक	को-एक	पाने-को	गिनती
H7200	H2088	H4672	H0559	H6953	H0259	H0259	H4672	H2808

> गरू का कहना है, “इन सभी बातों को एक साथ इकट्ठी करके मैंने सामने रखा, यह देखने के लिये कि मैं क्या उत्तर पा सकता हुँ? उत्तरों की खोज में तो मैं आज तक हूँ। किन्तु मैंने इतना तो पा ही लिया है कि हजारों में कोई एक अच्छा पुरूष तो मुझे मिला भी किन्तु अच्छी स्त्री तो कोई एक भी नहीं मिली।

28

אֲשֶׁר	עוֹד־	בִּקְשָׁה	נַפְשִׁי	וְלֹא	מָצָאתִי	אָדָם	אֶחָד	מֵאֶלֶף	מָצָאתִי	וְאִשָּׁה
जो	और-	खोजा	मेरे-प्राण-ने	और-नहीं	मैंने-पाया	मनुष्य	एक	हज़ार-में-से	मैंने-पाया	और-स्त्री
	H5750	H1245	H5315	H3808	H4672	H0120	H0259	H0505	H4672	H0802

בְכָל־	אֵלֶּה	לֹא	מָצָאתִי׃
सब-	इनमें-से	नहीं	मैंने-पायी
H3605	H0428	H3808	H4672

> गरू का कहना है, “इन सभी बातों को एक साथ इकट्ठी करके मैंने सामने रखा, यह देखने के लिये कि मैं क्या उत्तर पा सकता हुँ? उत्तरों की खोज में तो मैं आज तक हूँ। किन्तु मैंने इतना तो पा ही लिया है कि हजारों में कोई एक अच्छा पुरूष तो मुझे मिला भी किन्तु अच्छी स्त्री तो कोई एक भी नहीं मिली।

29

לְבַד	רְאֵה־	זֶה	מָצָאתִי	אֲשֶׁר	עָשָׂה	הָאֱלֹהִים	אֶת־	הָאָדָם	יָשָׁר	וְהֵמָּה	בִקְשׁוּ
केवल	देख-	यह	मैंने-पाया	कि	बनाया	परमेश्वर-ने	—	मनुष्य-को	सीधा	और-उन्होंने	खोजे-हैं
H0905	H7200	H2088	H4672			H0430	H0853	H0120	H3477	H1992	H1245

חִשְּׁבֹנוֹת	רַבִּים׃
योजनाएँ	बहुत
H2810	

> “एक बात और जो मुझे पता चली है। परमेश्वर ने तो लोगों को नेक ही बनाया था किन्तु लोगों ने बुराई के अनेकों रास्ते ढूँढ लिये।”